अमीर खुसरो

Saathi

Date __/__/__

⇒ अमीर खुसरो का पूरा नाम है- अबुल हसन यमीनुद्दीन।

⇒ जन्म - 1253ई०, मृत्यु- 1325ई० स्थान- दिल्ली के निकट। एटा जिले के पटियाली ग्राम में।

⇒ अमीर खुसरो लाचन जाति के तुर्क सैफुद्दीन के पुत्र थे।

⇒ इसके परिवार वाले ईरान से भारत आए थे।

⇒ चंगेज खाँ के आक्रमन से पीड़ित हो बलबन के समय शरणार्थी के रूप में भारत आए थे।

⇒ खुसरो की माँ बलबन के युद्धमंत्री इमादुतुल मुल्क की पुत्री तथा एक भारतीय मुसलान महिला थी।

⇒ सात वर्ष की अवस्था में ही खुसरो के पिता का देहांत हो गया।

⇒ खुसरो बचपन से ही कविता लिख रहे थे। २० वर्ष की अवस्था में कवि के रूप में ये प्रसिद्ध हो गये।

⇒ भारतीय कव्वाली, गजल, तबला तथा सितार के प्रवर्तक थे।

⇒ खुसरो ने भारतीय तथा ईरानी रागों का सम्मिश्रण किया।

⇒ पहेलियों और मुकरियों के भी प्रवर्तक है खुसरो।

⇒ आठ वर्ष की अवस्था में खुसरो 'निजामुद्दीन औलिया' के शिष्य बने

⇒ खुसरो मुस्लिम होने के बावजूद गैर सांप्रदायिक कवि हैं।

⇒ खुसरो ने ही पहली बार अपनी भाषा के लिए 'हिन्दवी' शब्द का प्रयोग किया, जिसमें हिन्दी और उर्दू का समान प्रयोग होता है।

⇒ खुसरो खड़ी बोली के प्रथम कवि माने जाते हैं।

⇒ अमीर खुसरो की रचनाएँ निम्न वत् हैं-

(1) मसनवी किरानुस्सादैन	(2) मसनवी मतउलअनवार
(3) मसनवी शीरीं व खुसरो	(4) मसनवी लैला-मजनूँ
(5) मसनवी आईना	(6) इस्कंदरी या सिकंदरनामा
(7) मसनवी हश्त बिहिश्त	(8) मसनवी खिज्रनामा
(9) मसनवी नुह सिपहर	(10) मसनवी तुगलकनामा
(11) खजायनुल्फुतूह	(12) ईसाए खुसरू
(13) रसायलुलएजाज	(14) अफजलुल्फवायद
(15) राहतुलमजी	(16) खालिकबारी
(17) जवाहिरुबहर	(18) मुकाल
(19) किस्सा चहार दरवेश	(20) दीवान तुहफतु स्सिगार
(21) दीवान गुर्रतुल्कमाल	

Page No.

हिन्दी साहित्य में चर्चित रचनाएँ:

1. खालिक बारी
2. गजल
3. मुकरियाँ
4. पहेलियाँ
5. दो सखुने आदि

अमीर खुसरो—मध्य एशियाकी लाचन जातिके तुर्क सैफुद्दीनके पुत्र अमीर खुसरोका जन्म सन् १९५४ ई० (६५२ हि०) में एटा (उत्तर प्रदेश)के पटियाली नामक कस्बेमें हुआ था लाचन जातिके तुर्क चंगेज खाँके आक्रमणोंसे पीड़ित होकर बलबन (१२६६-१२८६ ई०) के राज्यकालमें शरणार्थीके रूपमें भारतमें आ बसे थे। खुसरोकी माँ बलबनके युद्ध मन्त्री इमादुतुल मुल्क की लड़की, एक भारतीय मुसलमान महिला थी। सात वर्षकी अवस्थामें खुसरोके पिताका देहान्त हो गया, किन्तु खुसरो की शिक्षा-दीक्षा में बाधा नहीं आयी। अपने समयके दर्शन तथा विज्ञानमें उन्होंने विद्वत्ता प्राप्तकी, किन्तु उनकी प्रतिभा बाल्यावस्थासे ही काव्योन्मुख थी। किशोरावस्थामें उन्होंने कविता लिखना प्रारम्भ कियाऔर २० वर्षके होते-होते वे कविके रूपमें प्रसिद्ध हो गये। जन्मजात

कवि होते हुए भी खुसरोमें व्यावहारिक बुद्धिकी कमी नहीं थी। सामाजिक जीवनकी उन्होंने कभी अवहेलना नहींकी। जहाँ एक ओर उनमें एक कलाकारकी उच्च कल्पनाशीलता थी, वहाँ दूसरी ओर वे अपने समयके सामाजिक जीवनके उपयुक्त कूटनीतिक व्यवहार-कुशलतामें भी दक्ष थे। उस समय बुद्धिजीवी कलाकारोंके लिए आजीविकाका सबसे उत्तम साधन राज्याश्रय ही था। खुसरोने भी अपना सम्पूर्ण जीवन राज्याश्रयमें बिताया। उन्होंने गुलाम, खिलजी और तुगलक-तीन अफगान राज-वंशों तथा ११ सुल्तानोंका उत्थान-पतन अपनी आँखों देखा। आश्चर्य यह है कि निरन्तर राजदरबारमें रहनेपर भी खुसरोने कभी भी उन राजनीतिक षड्यन्त्रोंमें किंचिन्मात्र भाग नहीं लिया जो प्रत्येक उत्तराधिकारके समय अनिवार्य रूपसे होते थे। राजनीतिक दाँव-पेंचसे अपनेको सदैव अनासक्त रखते हुए खुसरो निरन्तर एक कवि, कलाकार, संगीतज्ञ और सैनिक ही बने रहे। खुसरोकी व्यावहारिक बुद्धिका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि वे जिस आश्रयदाताके कृपापात्र और सम्मानभाजन रहे, उसके हत्यारे उत्तराधिकारीने भी उन्हें उसी प्रकार आदर और सम्मान प्रदान किया।

सबसे पहले सन् १२७० ई० में खुसरोको सम्राट् गयासुद्दीन बलवनके भतीजे, कड़ा (इलाहाबाद)के हाकिम अलाउद्दीन मुहम्मद कुलिश खाँ (मलिक छज्जू)का राज्याश्रय प्राप्त हुआ। एक बार बलवनके द्वितीय पुत्र नसीरुद्दीन बुगरा खाँ की प्रशंसामें कसीदा लिखनेके कारण मलिक छज्जू उनसे अप्रसन्न हो गया और खुसरोको बुगरा खाँका आश्रय ग्रहण करना पड़ा। जब बुगरा खाँ लखनौतीका हाकिम नियुक्त हुआ तो खुसरो भी उसके साथ चले गये। किन्तु वे पूर्वी प्रदेशके वातावरणमें अधिक दिन नहीं रह सके और बलवनके ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान मुहम्मदका निमन्त्रण पाकर दिल्ली लौट आये। खुसरोका यही आश्रयदाता सर्वाधिक सुसंस्कृत और कला-प्रेमी था। सुल्तान मुहम्मदके साथ उन्हें मुल्तान भी जाना पड़ा और मुगलोंके साथ उसके युद्धमें भी सम्मिलित होना पड़ा। इस युद्धमें सुल्तान मुहम्मदकी मृत्यु हो गयी और खुसरो बन्दी बना लिये गये। खुसरोने बड़े साहस और कुशलताके साथ बन्दी-जीवनसे मुक्ति प्राप्तकी। परन्तु इस घटनाके परिणामस्वरूप खुसरोने जो मर्सिया लिखा वह अत्यन्त हृदयद्रावक और प्रभावशाली है। कुछ कुछ दिनों तक वे अपनी माँके पास पटियाली तथा अवधके एक हाकिम अमीर अलीके यहाँ रहे। परन्तु शीघ्र ही वे दिल्ली लौट आये। दिल्लीमें पुनः उन्हें मुईजुद्दीन क़ैकबादके दरबारमें राजकीय सम्मान प्राप्त हुआ। यहाँ उन्होंने सन् १२८९ ई० में 'मसनवी किरानुससादैन' की रचनाकी। गुलाम वंशके पतनके बाद जलालुद्दीन खिल्जी दिल्लीका सुल्तान हुआ। उसने खुसरोको अमीरकी उपाधिसे विभूषित किया। खुसरोने जलालुद्दीनकी प्रशंसामें 'मिफ्तोलफ तह' नामक ग्रन्थकी रचनाकी। जलालुद्दीनके हत्यारे उसके भतीजे अलाउद्दीनने भी सुल्तान होनेपर अमीर खुसरोको उसी प्रकार सम्मानित किया और उन्हें राजकविकी उपाधि प्रदानकी अलाउद्दीनकी प्रशंसामें खुसरोने जो रचनाएँ की वे अभूतपूर्व थीं। खुसरोकी अधिकांश रचनाएँ अलाउद्दीनके राजकालकी ही है। १२९८ से १३०१ ई० की अवधिमें उन्होंने पाँच रोमाण्टिक मसनवियाँ—१. 'मल्लोल अनवर', २. 'शिरीन खुसरो', ३. 'मजनू लैला', ४. 'आईन-ए-सिकन्दरी' और ५ 'हश्त विहिश्त' लिखीं। ये पंच-गंज नामसे प्रसिद्ध हैं। ये मसनवियाँ खुसरोने अपने धर्म-गुरु शेख निजामुद्दीन औलियाको समर्पित की तथा उन्हें सुल्तान अलाउद्दीनको भेंट कर दिया। पद्यके अतिरिक्त खुसरोने दो गद्य-ग्रन्थोंकी भी रचनाकी—१. 'खजाइनुल फतह', जिसमें अलाउद्दीनकी विजयोंका वर्णन है और २. 'एजाजयेखुसरवी', जो अलंकारग्रन्थ हैं। अलाउद्दीनके शासनके अन्तिम दिनोंमें खुसरोने देवलरानी खिज्रखाँ नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक मसनवी लिखी।

अलाउद्दीनके उत्तराधिकारी उसके छोटे पुत्र कुतुबुद्दीन मुबारकशाहके दरबारमें भी खुसरो ससम्मान राजकविके रूपमें बने रहे, यद्यपि मुबारकशाह खुसरोके गुरु शेख निजामुद्दीनसे शत्रुता रखता था। इस कालमें खुसरोने नूहसिपहर नामक ग्रन्थकी रचनाकी जिसमें मुबारकशाहके राज्य-कालकी मुख्य मुख्य घटनाओंका वर्णन है।

खुसरोकी अन्तिम ऐतिहासिक मसनवी 'तुगलक' नामक है जो उन्होंने गयासुद्दीन तुगलकके राज्य-कालमें लिखी और जिसे उन्होंने उसी सुल्तानको समर्पित किया। सुल्तान के साथ खुसरो बंगालके आक्रमणमें भी सम्मिलित थे। उनकी अनुपस्थितिमें ही दिल्लीमें उनके गुरु शेख निजामुद्दीनकी मृत्यु हो गयी। इस शोकको अमीर खुसरो सहन नहीं कर सके और दिल्ली लौटनेपर ६ मासके भीतर ही सन् १३२५ ई० में खुसरोने भी अपनी इहलीला समाप्त कर दी। खुसरोकी समाधि शेखकी समाधिके पास ही बनायी गयी।

शेख निजामुद्दीन औलिया अफगान-युगके महान् सूफी सन्त थे। अमीर खुसरो आठ वर्षकी अवस्थासे ही उनके शिष्य हो गये थे और सम्भवतः गुरुकी प्रेरणासे ही उन्होंने काव्य-साधना प्रारम्भ की। यह गुरुका ही प्रभाव था कि राज-दरबारके वैभवके बीच रहते हुए भी खुसरो हृदयसे रहस्यवादी सूफी सन्त बन गये। खुसरोने अपने गुरुका मुक्त कंठ से यशोगान किया है और अपनी मसनवियों में उन्हें सम्राट्से पहले स्मरण किया है।

अमीर खुसरो मुख्य रूपसे फारसीके कवि हैं। फारसी भाषापर उनका अप्रतिम अधिकार था। उनकी गणना महाकवि फिरदोसी, शेख सादिक और निजामी फारसके महाकवियोंके साथ होती है। फारसी काव्यके लालित्य और मार्दवके कारण ही अमीर खुसरोको 'हिन्दीकी तूती' कहा जाता है। खुसरोका फारसी काव्य चार वर्गोंमें विभक्त किया जा सकता है—ऐतिहासिक मसनवी जिसमें किरानुससादैन, मिफतोलफतह, देवलरानी खिज्रखाँ, नूहसिपहर और तुगलकनामा नामकी रचनाएँ आती हैं; रोमाण्टिक मसनवी—जिसमें मतलऊ लअनवार, शिरीन खुसरी, आईन-ए-सिकन्दरी, मजनू-लैला और हश्त विहश्त गिनी जाती है; दीवान—जिसमें तुहफ तुम सिगहर, वास्तुलहयात आदि ग्रन्थ आते हैं; गद्य रचनाएँ—'एजाजयेखुसरवी' और 'खजाइनुलफतह तथा मिश्रित'—जिसमें 'वेदऊलअजाइब', 'मसनवी शहरअसुब', 'चिश्तान' और 'खालितबारी' नामकी रचनाएँ परिगणित हैं।

यद्यपि खुसरोकी महत्ता उनके फारसी काव्यपर आश्रित है, परन्तु उनकी लोकप्रियताका कारण उनकी हिन्दवीकी रचनाएँ ही हैं। हिन्दवीमें काव्य-रचना करनेवालोंमें अमीर खुसरोका नाम सर्वप्रमुख है। अरबी, फारसीके साथ-साथ अमीर खुसरोको अपने हिन्दवी ज्ञानपर भी गर्व था। उन्होंने स्वयं कहा है—'मैं हिन्दुस्तानकी तूती हूँ। अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो तो हिन्दवी में पूछो! मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूँगा।" अमीर खुसरोने कुछ रचनाएँ हिन्दी या हिन्दवीमें भी की थीं, इसका साक्ष्य स्वयं उनके इस कथनमें प्राप्त होता है—"ज़ुजवे चन्द नज्में हिन्दी नजरे दोस्तां करदाँ अस्त।" उनके नामसे हिन्दीमें पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने और कुछ गजलें प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त उनका फारस-हिन्दी कोश खालिकबारी भी इस प्रसंगमें उल्लेखनीय है।

दुर्भाग्य है कि अमीर खुसरोकी हिन्दवी रचनाएँ लिखित रूपमें प्राप्त नहीं होतीं। लोकमुखके माध्यमसे चली आ रहीं उनकी रचनाओंकी भाषामें निरन्तर परिवर्तन होता रहा होगा और आज वह जिस रूपमें प्राप्त होती है वह उसका आधुनिक रूप है। फिर भी हम निस्सन्देह यह विश्वास कर सकते हैं कि खुसरोने अपने समयकी खड़ी बोली अर्थात् हिन्दवीमें भी अपनी पहेलियाँ, मुकरियाँ आदि रची होंगी। कुछ लोगोंको अमीर खुसरोकी हिन्दी कविताकी प्रामाणिकतामें सन्देह होता है। स्व० प्रोफेसर शेरानी तथा कुछ अन्य आलोचक विद्वान् खालिकबोरीको भी प्रसिद्ध अमीर खुसरोकी रचना नहीं मानते। परन्तुखुसरोकी हिन्दी कविताके सम्बन्धमें इतनी प्रबल लोकपरम्परा है कि उसपर अविश्वास नहीं किया जा सकता यह परम्परा बहुत पुरानी है। 'अरफतुलआसितीन' के लेखक तकीओहदी जो १६०६ ई० में जहाँगीरके दरबारमें आये थे खुसरोकी हिन्दी कविताका जिक्र करते हैं। मीरतकी 'मीर' अपने 'निकातुसस्वरा'में लिखते हैं कि उनके समय तक खुसरोके हिन्दी गीत अति लोकप्रिय थे (दे० यूसुफ हुसन : 'रिलम्प्सेज आव मिडीवल इण्डियन कल्चर', पृ० १९५। इस सम्बन्धमें सन्देहको स्थान नहीं है कि अमीर खुसरोने हिन्दवीमें रचनाकी थी। यह अवश्य है कि उसका रूप समयके प्रवाहमें बदलता आया हो। आवश्यकता यह है कि खुसरोकी हिन्दी-कविताका यथासम्भव वैज्ञानिक सम्पादन करके उसके प्राचीनतम रूपको प्राप्त करनेका यत्न किया जाय। काव्यकी दृष्टिसे भले ही उसमें उत्कृष्टता न हो, सांस्कृतिक और भाषा वैज्ञानिक अध्ययनके लिए उसका मूल्य निस्सन्देह बहुत अधिक है।—मा० ब० जा०